व्यवहर्ताक प्रति

रूप-रेखा ओ अनुक्रम

ई शब्दकोश फूट-फूट अनुच्छेदमे विभक्त अछि। प्रत्येक अनुच्छेदक आदिमे एक-एकटा मूल शब्द अछि आओर तदुत्तर अनुषङ्गी शब्द अछि; यथा व्युत्पन्न शब्द, समास ओ पदबन्ध। पुनरुक्तिसँ बचबालेल अनुषङ्गी शब्दक पाछु लागल मूल शब्द तीन प्रकारक सङ्केत द्वारा व्यक्त कएल गेल अछि। यथा मूल शब्द 'मधु' बाला अनुच्छेदमे

(i) **~ ऋतु** = मधु ऋतु (हटाएकेँ मधु शब्द जोड़ल);
(ii) **°कुप्पी** = मधुकुप्पी (सटाएकेँ मधु शब्द जोड़ल);
(iii) **-कोष** = मधु-कोष (हाइफन-सहित मधु शब्द जोड़ल)।

प्रत्येक अनुच्छेदमे अपेक्षानुसार यथाक्रम एतबा वस्तु देल गेल अछि—(1) मूल शब्द, मोट नागरी अक्षरमे; (2) उच्चारण, मोट उडरेजी अक्षरमे, पहिने मानक, तदुत्तर प्रचलित; (3) व्युत्पत्ति, स्रोत आदि भाषिक सूचना, कोणीय कोष्ठकमे अङरेजीमे; (4) शब्दवर्ग-सङ्केत संज्ञा, विशेषण आदि, अङरेजी तिर्यक् अक्षरमे; (5) अर्थ-क्रमाङ्क, अन्तरराष्ट्रीय अङ्कमे आगाँ बिन्दुरूपी विराम दैत, यथा 1., 2., 3. इत्यादि; (6) व्याख्या, मैथिलीमे; (7) व्याख्या, अङरेजीमे; (8) उदाहरण, मैथिलीमे, तिर्यक् अक्षरमे; (9) उदाहरणक अर्थ, दोहारा उद्धरण-चिह्नसँ वेष्टित, मैथिली ओ/वा अङरेजीमे, तिर्यक् अक्षरमे; (10) अनुषङ्गी शब्द, मोट नागरी अक्षरमे; तदुत्तर अनुषङ्गी शब्दक मूलशब्दवत् शब्दवर्ग, अर्थक्रमाङ्क ओ व्याख्या।

नागरीमे वर्णक्रमिक विन्यासक विषयमे अनेक मतभेद अछि। एहि कोशमे कोन मत अपनाओल गेल अछि ताहि प्रसङ्ग अपेक्षित स्पष्टीकरण नीचाँ देल जाइत अछि।

(क) एहि कोशमे अनुस्वार+व्यञ्जनक स्थानमे नासिक्य+व्यञ्जन राखल गेल अछि। तदनुसार एहि कोशमे *अंक, कंचन, कंठ, अंत* आ *पंप* शब्द नहि भेटत; तकरा स्थानमे क्रमशः *अङ्क, कञ्चन, कण्ठ, अन्त* आ *पम्प* भेटत। फलतः एहि शब्दसभक स्थान क्रमशः ङ्, ञ्, ण्, न् आ म् केर अनुक्रममे होएत, अनुस्वारक अनुक्रममे नहि।

(ख) आनुनासिक्य, जे चन्द्रबिन्दुसँ सूचित कएल जाइत अछि, कोनो स्वतन्त्र वर्ण नहि थिक, अपितु स्वर वर्णक एक गुण (क्वालिटी) थिक, तहिँ भारतीय वर्णमालामे एकरा स्थान नहि देल गेल अछि। तदनुसार अनुक्रम-निर्धारणमे चन्द्रबिन्दु अस्तित्वहीन मानल गेल अछि। उदाहरणार्थ, एहि कोशमे *अँकुसी* शब्द *अकुलाएब* लग भेटत, *अंश* लग (अनुस्वारक अनुक्रममे) नहि।

(ग) मौलिक अनुस्वार (जे व्यञ्जन नहि बनाओल जाए सकैत अछि) अनुक्रममे *औ* स्वरसँ आगाँ राखल गेल अछि (स्वरसँ पहिने नहि)। तदनुसार *आंशिक* शब्दक स्थान *आओर* शब्दक बाद होएत। एहिना *किऔड़ी* शब्दक आगाँ *किंवदन्ती*, तदुत्तर *किकिआएब*।

(घ) क्ष्, त्र् आओर ज्ञ् कोनो स्वतन्त्र वर्ण नहि थिक; वस्तुतः ई संयुक्त व्यञ्जन थिक : क् + ष् = क्ष्, त् + र् = त्र् तथा ज् + ञ् = ज्ञ्। तदनुसार तीनू क्रमशः कवर्ग, तवर्ग ओ चवर्गक बीच अपन अनुक्रमानुसारी स्थानमे भेटत।

(ङ) मैथिल जिह्वाक सहज प्रवृत्ति दन्त्य *स्* दिस अछि, तालव्य *श्* दिस नहि। संस्कृत शब्दहुमे मिथिलावासी *श्* क स्थान *स्* उच्चारण करैत अछि। तथापि संस्कृत शब्दमे *श्* यथावत् राखल गेल अछि आ उच्चारणहुमे तकरे अनुसरण कएल गेल अछि। परन्तु संस्कृतेर शब्दमे लेख ओ उच्चारण दूनूमे तालव्यक स्थान दन्त्ये *स्* विशेष प्रचलित अछि। अतः एहि कोशमे *फेशन, शरीफा, शोर* नहि भेटत, तकरा स्थानमे भेटत *फेसन, सरीफा, सोर।*

(च) मिथिलामे *य्* आ *ष्*क उच्चारण किछु स्थितिमे *ज्* आ *ख्* कएल जाइत अछि, किन्तु लेखमे *य्* आ *ष्* इएह चलैत अछि। एहि कोशमे एहि दूनूक उच्चारण तँ प्रचलनानुसार *ज्* आओर *ख्* देल अछि, किन्तु लेखमे एहन *य्* आ *ष्* यथावत् राखल गेल अछि। अतः एहि कोशमे यमुना आ षष्ठी तँ भेटत, किन्तु *जमुना* आ *खष्ठी* नहि भेटत।

एहि कोशमे उपर्युक्त वर्णक्रमक अनुसरण आदिसँ अन्त धरि मूल शब्द ओ अनुषङ्गी शब्द सर्वत्र परिशुद्धताक सङ्ग कएल गेल अछि। तथापि कतहु-कतहु बिरलेक ठाम सुविधाक अनरोधेँ क्रमभङ्ग भेल अछि। एहि प्रकारक क्रमभङ्ग विशेषतः ततए भेल अछि जतए °*ब* प्रत्ययक सङ्ग क्रियापद आएल अछि। एहन स्थितिमे अनुक्रम-निर्धारणमे *ब* केर उपेक्षा कए देल गेल अछि। उदाहरणार्थ *रोक* आ *रोप* संज्ञा अएबाक तँ चाही *रोकब* आ *रोपब*सँ उपर, परन्तु व्याख्यामे सुविधार्थ ओहि दूनूक अन्तर्गत अनुषङ्गी शब्दक रूपमे राखि देल गेल अछि। एहिसँ भिन्न प्रकारक स्थितिमे उत्क्रम-स्थापित शब्दक पुनरुल्लेख समुचित स्थान पर निर्देश-प्रविष्टिक रूपमे कए देल गेल अछि। उदाहरणार्थ *तिरहुता* आ *महीपम* देखू।

मानक ओ अमानक रूपान्तर

एहि कोशमे शब्द सामान्यतः मानक रूपमे राखल गेल अछि। अमानक रूप-रूपान्तर तकबाक एक युक्ति बहार कएल गेल अछि। जँ रूपभेदक कारणेँ कोनो शब्द एहि कोशमे नहि भेटए तँ पृ॰ xiv पर देल गेल तालिका देखल जाए। अन्वेषणीय शब्दक अक्षर तालिकाक प्रथम स्तम्भमे ताकल जाए, ओहि अक्षरक स्थानमे सम्मुखस्थ तृतीय स्तम्भक अक्षर लए लेल जाए। एहि प्रकारेँ ओ वाञ्छित शब्द मानक रूपमे आबि जाएत आ से मानक रूप एहि कोशमे प्रायः भेटि जाएत। उदाहरण—अन्वेषणीय शब्द अछि *अखन*, से कोशमे नहि भेटल। तालिका देखि 'अ' केँ हटाए 'ए' कए देल, तँ ओ भए गेल *एखन*, से कोशमे अछि। तालिकामे बहुत रास उदाहरण सेहो दए देल गेल अछि।

शब्द कोना रचल जाए

एहि कोशक परिशिष्टमे दुइ गोट प्रत्यय-सूची [तालिका I ओ तालिका II] देल गेल अछि। एहि दूनू सूचीसँ केवल संज्ञा आ विशेषणे टा नहि, असङ्ख्य क्रियापद-रूपावली सेहो बनाओल जाए सकैत अछि। अतः जँ कोनो एहन रचित शब्द एहि कोशमे नहि भेटए तँ ओकर निकटतम शब्द ताकू, ओकर मूल भाग (सामान्यतः दू वा एक वर्ण) काछि लिअ, तखन वाञ्छित शब्दक शेष भाग तालिकामे ताकू। दूनूकेँ जोड़ू, वाञ्छित शब्द बनि जाएत। तखन दूनू ठामक व्याख्या पढ़ू आ तकरहु जोड़ू तँ अर्थो स्पष्ट भए जाएत। उदाहरणार्थ, वाञ्छित शब्द अछि *देखलकैक।* कोशमे एकर निकटतम शब्द भेटत देखब; एहिसँ दू अक्षर *देख* लए लिअ; तखन तालिकामे °*लकैक* ताकू, दूनूकेँ जोड़लापर *देखलकैक* बनि गेल। एना *अङ्कित* शब्द नहि भेटए तँ *अङ्क* कोशसँ आ °*इत* तालिकासँ लए दूनूकेँ जोड़ि स्वयं रचि लिअ।